मेरा घर कहां?

नासिरा शर्मा

लाली धोबिन की मिट्टी तभी से पलीद थी जब से उसका मरद मरा था। तीन बच्चों के संग अड्डे पर जाना और घर-घर से जाकर कपड़े समेटना अब उसके बस की बात नहीं रह गयी थी। छोटा लड़का साल भर का था। कभी गरम इस्त्री पकड़ लेता तो कभी धुले कपड़े पर अपना लकड़ी का चटुआ फेंक धब्बा लगा देता। तंग आकर लाली ने घरों में काम करने की ठानी। बरतन, झाडू और आटा गूंधने से उसके पास इतने पैसे आने लगे कि वह चैन से रोटी के साथ लहसुन की चटनी खा सकती थी।

बड़ी लड़की सोना दस-ग्यारह साल की हो रही थी। मोहल्ले के लड़कों के आकर्षण का केन्द्र थी। गन्दे नाले के पास बसी यह झुग्गियां बिना पानी के बजबजाती रहती थीं। हर तरह की गाली और धन्धे यहां के लागों की दिनचर्या थी। फैशनेबल कालोनी के सामने बसी यह बस्ती अपने में एक हकीकत थी। लाली के पति राजा ने इस खाली मैदान में औरों की तरह कब्ज़ा पाने की नीयत से झुग्गी डाली थी। गांव में बेरोज़गारी से तंग आकर दोनों शहर की तरफ निकले थे। कुछ दिन चैन से गुज़रे। फिर उसे लत लग गयी पन्नी पीने की और उसी के चलते वह एक दिन नशे की हालत में चल बसा।

जवान होती लड़की को बचाने के चक्कर में लाली ने हालात के सामने हथियार डाल दिये और रोज़-रोज़ राह रोकने वाले अधेड़ बदमाश दिगम्बर दादा के घर बैठ गयी। अब उसके तेवर दूसरे थे। दिगम्बर का बस्ती पर दबदबा था। चाकू, कट्टा, लाठी, जंजी उसके खिलौने थे। दिगम्बर की घरवाली को मरे चार-पांच साल गुज़र गये थे। इस बीच दिगम्बर भी औरतों को पटाते हुए और ज़ोर-ज़बरदस्ती करते-करते थक चुका था। उसे घर में रोटी के साथ पैर दबाने वाली एक औरत की ज़रूरत थी। कई महीनों तक नीम के नीचे बैठी लूली फकीरन के बारे में सोचता रहता कि जवान है, सुन्दर है मगर दोनों हाथ...? यहीं पर आकर रुक जाता, जबकि फकीरन राजी थी। उन्हीं दिनों लाली जब किसी लौण्डे की शिकायत लेकर आयी तो उसने फैसला कर लिया कि इस धोबिन को अपने घर के घाट से कहीं जाने नहीं दूंगा।

लाली की लड़की सोना को जो तीन वक्त खाने को मिलने लगा तो उसकी आंखों में तरावट और बदन पर गदबदापन आने लगा। उम्र भी रस्सी कूदती तेरह पार कर चौदहवें में लग रही थीं। लाली को उसकी शादी की फिक्र थी। सोना भूख का मज़ा चख चुकी थी सो दिगम्बर दादा के पैर दबाने, भांग पीसने और सर में तेल लगाने पर उसे कोई ऐतराज़ न होता। मगर शादी से उसकी जान निकलती कि जाने कहां मां भेजे और सारे दिन खटने के बाद फिर वही रोटी और चटनी के लिए खिटपिट। मगर लाली अब उठते-बैठते उसके दिमाग में इन जुमलों की सुइयां चुभोती कि लड़की का असली घर शौहर का होता है। मां-बाप तो बस लड़की के पालने वाले होते हैं। यही दुनिया का कायदा कानून है।

सोना का ब्याह बिरादरी को खाना खिला, बाजे-गाजे, दहेज के संग नन्कू के साथ हो गया। निकाह के बाद नन्कू सोना को विदा करा अपने घर मंगोलपुरी ले गया। उसका परिवार बड़ा था। फूफी, ताई और उसकी मां विधवा होकर एक साथ रहती थीं और प्लास्टिक की चप्पलों के तले के तीन छेदों में पट्टा डालने का काम करती थीं। वही उनकी रोजी-रोटी थी। नन्कू सुबह जाकर आठ-दस गट्ठर तले और पट्टे ले आता था। नन्कू के पास एक कमरा था। उसी में खाना-पीना, सोना-बिछौना था।

सोना नई दुल्हन थी। तीन विधवाओं के बीच खाना पकाना, सजना-संवरना और पति के संग कुछ घण्टे अकेले कमरे में रहना उसकी ज़िम्मेदारी थी। बाहर धूप या छांव में बैठ तीनों काम करतीं और दोपहर में पांचों साथ खाना खाकर कुछ देर सुस्ताते थे। ऐसी ज़िन्दगी सोना ने कभी जी नहीं थी। वह झुग्गियों में खेलकर बड़ी हुई थी। फिर पांच-छह साल की थी जब से घर-घर इस्त्री के कपड़े मां-बाप के साथ मांगने जाती और जब दिगम्बर दादा की रखैल की बेटी कहलायी तो अकड़कर चलना सीख गयी। परेशान करने वाले लड़कों की उसने ऐसी खबर ली थी कि वह सोना को देख रास्ता बदल लेते थे। यह शादी भी दिगम्बर दादा के दबदबे के चलते हुई थी। नन्कू पहले नशे की पुड़िया बेचता था। एक दिन पुलिस पकड़कर ले गयी थी। उस समय दिगम्बर जाकर छुड़ा लाया था। वहां की मार से डरकर उसने स्मैक के धन्धे से तौबा कर ली थी। अब जो शरीफ़ बना तो उसे सोना का चटपट हर एक से बात करना, हंसना-बोलना बहुत अखरता था। खासकर तब जब सब जानते थे कि सोना की मां लाली धोबिन दिगम्बर दादा की रखैल है।

सभी जानते थे कि दंगे-फसाद में लूट का माल दिगम्बर के घर भरा था। इस बार जो बम फटा तो दिगम्बर उसमें उड़ गया। लाली की दुनिया उजड़ गयी। उसको डर ने घेर लिया कि कहीं उसको बस्ती वाले लूट न लें या फिर दिगम्बर का दाहिना हाथ कहलाने वाला रग्घू उसको अपनी रखैल न बना ले। अब हालात ऐसे थे नहीं कि जो उसे किसी मर्द की ज़रूरत पड़ती। इसलिए वह झटपट सीमापुरी में मकान ले, पहलवान की ट्रक पर सारा सामान लदवा रातों-रात झुग्गी छोड़कर भाग ली। हफ़्तों उसने अपनी खैर खबर सोना को न दी। सच पूछा जाये तो वह अब अपनी ज़िन्दगी को अपनी तरह जीना चाहती थी। उसके पास माल काफी था। दोनों लड़कों का नाम वह स्कूल में लिखवा चुकी थी। रोज़ के खरचे के लिए उसने कपड़े इस्त्री करने फिर शुरू कर दिये थे। इससे मोहल्ले में जान-पहचान जल्दी बन गयी और यह बताने में आसानी हुई कि उसका पति राजा पुलिस लाइन में धोबी था। मरने के बाद नौकरी गयी सो इस मोहल्ले में आन बसी।

सोना को नन्कू ने जब मोहल्ले के जवान लड़कों के संग कई बार हंसते-बोलते देखा और जब मना करने पर भी कहा न मानी तो उसने सोना की जमकर पिटाई कर दी। बदले में सोना ने भी नन्कू के सर पर बेलन दे मारा। तीनों विधवाओं ने ऐसी लड़की कहां देखी थी जो मियां को पीटकर रख दे? सो उठते-बैठते बुरा-भला कहतीं। दिगम्बर के मरने से वह डर भी खत्म हो गया कि सोना मायके जाकर उनकी शिकायत करेगी और अब तो उसकी मां भी लापता थी। ऐसी हालत में जो होता है वही हुआ। बढ़ती लड़ाई से तंग आकर नन्कू ने सोना को घर से निकाल दिया। उसने जब अपने कपड़े और बिस्तर मांगा तो जवाब में सबने मिलकर उसके गहने भी उतरवा लिये और उसे धमकाया कि यह उसका घर नहीं है जो फिर यहां कदम रखा तो पैर काट दिए जायेंगे।

सोना एक बार फिर सड़क पर बेसहारा खड़ी थी। बाप और पति के घर का जादू झूठा साबित हुआ। मां का पता नहीं था। उसका दूर का चाचा नीतिबाग में इस्त्री का काम करता था। पिता के मरने के बाद एक-दो बार आया था। वहीं एक सहारा बचा था। रोती-धोती वह मंगोलपुरी से नीतिबाग, बिना बस का किराया भाड़े, पहुंच गयी। बड़ी-बड़ी कोठियों के बीच वह चाचा को कहां ढूंढ़े? एक-दो फल के ठेलेवालों से उसने पूछा कि रमज़ान धोबी को जानते हो? जबाब न में मिला। आखिर थककर वह पेड़ के नीचे बैठ गयी जिसके पास किसी घनश्याम धोबी का अड्डा था। कुछ देर बाद घनश्याम कपड़े देकर लौटा तो सोना ने उससे रमज़ान के बारे में पूछा।

चित्रः प्रशांत ए.वी.

"तू कैसे जानती है उसे?"

"वह मेरा चाचा है, मेरे अब्बा राजा का दूर का रिश्तेदार। उसके मरने पर आया था।"

"तू..."

"मैं सोना हूं। मेरा ब्याह मंगोलपुरी के नन्कू के साथ मां ने किया था। उसने मुझे मारपीट कर निकाल दिया। मां जाने कहां चली गयी है दिगम्बर दादा के मरने के बाद। अब मेरा सहारा कोई नहीं है, कहां जाऊं?"

"मेरे झोंपड़े चल... वहीं रह। आखिर मेरी भी कोई ज़िम्मेदारी बनती है न!"

"मतलब तू..." अकड़कर खड़ी हो गयी सोना।

"मैं रमज़ान हूं। नाम बदल लिया है। सुख से रहता हूं। घरवाली गांव गयी है। झोपड़ी में रह ले कुछ दिन। काम ढूंढ दूंगा किसी कोठी में... रमज़ान ने हंसकर कहा। उसकी बात सुन सोना की चढ़ी सांस की गति मद्धिम पड़ी और गुस्सा काफूर हुआ।

रमज़ान चाचा उर्फ़ घनश्याम प्रेस वाले की झोंपड़ी जो कुछ दूर पर थी, वहां जाकर सोना ने चैन की सांस ली और भर गिलास चाय बना पी और बिखरे बरतन, कपड़े समेटने में लग गयी। उसका माथा अभी घूमा हुआ था। ज़िन्दगी के इस बदलाव से अभी वह समझौता नहीं कर पा रही थी। दुःख-सुख तो लगा ही रहता है मगर इतनी उठा-पटक भी कैसी कि सर से छत ही छिन जाये और कहने को कोई घर न बचे?

कुछ दिन इस इंतज़ार में गुज़र गये कि शायद नन्कू उसे लेने आ जाये और बात रफा-दफा हो जाये। इस बीच रमज़ान नन्कू के घर दो बार हो भी आया मगर वे सोना को वापस बुलाने पर किसी तरह राजी न हुए। रमज़ान की परेशानी यह थी कि चार हफ़्ते बाद घरवाली मायके से तीन बच्चों के साथ टपकने वाली थी। सोना को देखकर उसका माथा फिर जायेगा। सोना को कहीं काम नहीं मिल रहा था। तंग आकर एक दिन सोना खुद मंगोलपुरी गयी ताकि लड़-लड़ाकर अपना हक़ जमाये और फिर से रहना शुरू कर दे। मगर वहां पहुंचकर हाथों के तोते उड़ गये।

घर के सामने झिलमिल पन्नियों का नन्हा-सा छत्तुर बना था। औरतें गाना गा रही थीं। सामने पड़े पतीलों पर कुछ चढ़ा था। सोना जो और आगे बढ़ी तो देखा नन्कू दूल्हा बना बैठा है और पास में गठरी बनी लाल कपड़ों में दुल्हन। अन्दर से उठा उसका गुस्सा उसके सर चढ़ गया। पैरों की चप्पल उतार उसने पीछे से जाकर नन्कू के सर-पीठ पर जी-भर कर जमायी। खुशी का माहौल थम गया। कई पल तक किसी के समझ में नहीं आया कि यह हुआ क्या, दूल्हे का सेहरा, हार नोचकर किसने फेंका। दुल्हन भी घूंघट उठाकर हैरत से शौहर को पिटता देख रही थी।

पल-भर बाद दृश्य दूसरा था। तीनों विधवायें सोना का झोंटा पकड़ कर बकरी की तरह उसे इधर-उधर घसीट रही थीं। दूल्हा तब ज़रा होश में आया। किराये पर ली चमचमाती शेरवानी का कालर उधड़ा देखा और पगड़ी को कीचड़ में लोटता तो उसका पारा सातवें आसमान में जा चढ़ा। लातों की बारिश उसने सोना के कूल्हे-पीठ पर इस तरह करनी शुरू कर दी जैसे धोबी-घाट पर कपड़े पछाड़ता हो। यह हाल देख लड़की वाले परेशान हो उठे। दुल्हन जाकर मां से लिपट गयी और बाकी लोग दुम दबाकर भागने लगे। तभी अधमरी सोना को नाली के पास छोड़कर नन्कू तैश में पलटा और चूल्हे के पास चाकू उठाकर उसे ससुरालवालों को दिखाकर उसी जुनूनी कैफ़ियत में चिल्लाकर सबसे कहा, "कोई जाने न पाये वरना सर धड़ से अलग कर दिया जायेगा।"

कौन से हज़ारों मेहमान थे। कुल पन्द्रह-बीस की भीड़ थी। जान किसे प्यारी नहीं होती सो सब दम साधकर बैठ गये। तीनों विधवाओं ने टीन की कुर्सी पर दुल्हन को बिठाया और लाल दुपट्टे का साफा नन्कू के सर पर बांध, उसे दूसरी कुर्सी पर बिठा पहले की तरह ढोलक लेकर बैठ गयीं। सोहाग के गाने की तान में लोगों की खुसर-पुसुर गुम हो गयी। सोना ने कराहकर सर उठाया तो देखा वहां कुछ भी नहीं बदला था। फिर अपने को ताका जहां बहुत कुछ बदल चुका था। किसी तरह उठकर लड़खड़ाती खड़ी हुई और बस स्टॉप की तरफ बढ़ने लगी।

चित्र: प्रशांत ए.जी.

सोना जख्मी कबूतरी की तरह टूटे डैनों के संग जब रमज़ान के पास पहुंची तब तक वह एक बोतल संतरा चढ़ा नशे में धुत्त औंधा पड़ा था। सोना ने हल्दी का लेप खुद ही चोटों पर लगाया और चुपचाप

लेटकर सोचने लगी कि वह कई दिनों तक चलने-फिरने के काबिल नहीं रह पायेगी, वरना कल से वह भी एक मेज़ डाल इस्त्री का अड्डा बना लेती। मगर अब तो... सुबह जब रमज़ान की आंख खुली तो सोना को बुखार में तपते देखा। डॉक्टर ने इंजेक्शन लगाकर दवाइयां दी, जिससे सोना रात तक संभल गयी और बुखार भी उतर गया। रमज़ान का दिल लड़की के लिए दुःख रहा था। उसकी मां को कहां ढूंढे जो सोना को जाकर उसके सुपुर्द कर दे। सारे दिन अड्डे पर इसी उधेड़बुन में रहा।

पीली कोठी में सोना को झाड़ू-पोंछे की नौकरी मिल गयी थी। उससे पहले उसने इस्त्री करना चाहा तो कपड़ा जला दिया। ज़िन्दगी में अपना खानदानी पेशा कभी किया हो तो जानती। वह तो बस कपड़ा जमा करने का काम जानती थी, जो रमज़ान को पसन्द न था। वह कोठी वालों को जानता था। साहब लोगों से शाही आदतों के उनके नौकर और ड्राइवर होते हैं तो भी वह सोना को रोक नहीं सकता था। आखिर उसकी घरवाली के लौटने में दो दिन बाकी थे। इस बीच सोना ने मालकिन को खुश कर गैरज में सोने की इजाज़त ले ही ली। यह जानकर रमज़ान ने राहत की सांस भरी।

सोना अब पूरे अट्ठारह साल की हो रही थी। इसी बीच उसने छह-सात ठिकाने बदले थे। जहां जमने लगती वहीं से उखाड़ दी जाती। इस कोठी में भी हज़ारों काम मुफ्त करती कि रात को बन्द जगह सोने को मिल जाये। झाड़ू-पोंछा कर जब गरम प्याला चाय पीती तो भूखी अंतड़िया ऐंठने लगतीं। बंधा-बंधाया खाने का हिसाब तो था नहीं। कभी कोठी से मिल गया, तो कभी रमज़ान ने अपनी रोटी थमा दी। मगर उधर जब उसके हाथ में दो सौ के नोट आए तो उसने दोपहर को पिछवाड़े वाले ढाबे पर दो रोटी और साथ में मिली दाल खानी शुरू कर दी। कपड़ा, चप्पल, शॉल मेम साहब की उतरन मिल गयी थी। चादर भी बिछाने को उन्हीं ने दे दी थी। ज़िन्दगी में ठहराव-सा आ गया था।

एक रात जब सोना गहरी नींद सो रही थी तो उसे सपने में लगा कि उसकी मां उसे सीने से लिपटा प्यार कर रही है। फिर उसे लगा कि दो मज़बूत बांहें उसे अपने कसाव में पकड़ रही हैं। इतने दिनों बाद पति का स्पर्श उसे सोते में सुख दे रहा था। तभी ठण्ड की झुरझुरी से वह जाग उठी। अंधेरे में उस पर कोई झुका था। उसकी गरम सांसें उसके चेहरे को छू रही थी। खुशबू का एक झोंका बहा। सपनों और नींद ने सब कुछ धुंधला-सा दिया मगर यह खुशबू? नन्कू के पास से तो पसीने की गंध आती थी...?

"कौन... कौन?" सहमी-सी सोना बोली।

"चुप... किसी को पता भी नहीं चलेगा... उठ चल मेरे कमरे में वहां नरम बिस्तर है आराम से लेटना... उठ।"

"छोटे साहब!" चौंक पड़ी सोना।

पीठ सहलाते हाथों को उसने झटका और उछलकर खड़ी हो गयी। मरदाने हाथों की जकड़न बढ़ी तो उसने बाजुओं पर नुकीले दांत गाड़ दिये। दर्द की शिद्दत से गिरफ़्त ढीली पड़ी। मगर उसी के साथ एक ज़ोरदार चांटा सोना के गाल पर पड़ा। उसकी आंखों के सामने तारे टूटे। वह लड़खड़ा कर दीवार से टकरायी। तभी उसे महसूस हुआ कि हाथों की वहशत फिर सांप बन उसे जकड़न में ले रही है। कुछ देर वह सांस रोके बेजान-सी खड़ी रही। उसे बेहोश जानकर छोटे साहब ने ज़मीन पर लिटाया... और तभी उसने पूरी ताकत से लात सीने पर मारी और कार और साइकिल के औज़ारों के बीच से कुछ उठाया और भरपूर हाथों से छोटे साहब के सर पर दे मारा।

गुलाबी ठण्ड में सड़क के किनारे बैठी सोना जाड़े से कांप रही थी। उसे अपने कपड़े की गठरी और चादर याद आ रही थी। उसने बहते आंसुओं को पोंछा और थका बदन घसीटा। पौ फटने से पहले उसे यह इलाका छोड़ना पड़ेगा। पता नहीं छोटे साहब का सर फटा या... पुलिस में रपट लिखवायी गयी तो वह बच नहीं पायेगी। कहां जाये? सड़क के किनारे चलते-चलते उसके बदन में गरमी आयी। पैर में कुछ चुभने से उसे रुकना पड़ा। कांटा निकालते हुए उसे अपने बाप की झुग्गी का ख्याल आया। बाप की याद से वहीं बैठे-बैठे फफक पड़ी। न वह मरता न उसकी सबकी गत बनती।

वह बस्ती बदली नहीं थी। बिना पानी के गन्दगी से बजबजाती हुई वहां झुग्गियों की तादाद बढ़ गयी थी। आधे से ज़्यादा लोग नये थे। पुराने अपना कब्ज़ा बेच कहीं चले गये थे। वहां से जब निराश लौटने लगी तो उसे ध्यान आया कि रग्घू दादा से मिलती जाऊं। शायद कोई काम बन जाये। रग्घू ने उसे ठहरने की एक जगह दे दी। दिगम्बर के रिश्ते से उसे थोड़ा-बहुत नकद भी दिया ताकि अपनी ज़िन्दगी बसा सके। कोठियों में उसका अनुभव कड़वा था मगर काम मांगने कहां जाती? हारकर वहीं पहुंची और काम कर अपने ठिकाने लौट आती। पन्द्रह-बीस दिनों में वह पुरानी कड़वाहट भूलकर फिर से अपने को खुश रखने लगी और उसने तय किया कि बाकी ज़िन्दगी अब वह इसी बस्ती में गुज़ार देगी।

सोना की दूसरी शादी की बात रमज़ान ने एक-दो लोगों से चलायी थी जिन्होंने सोना को रमज़ान के घर देख पसन्द किया था। मगर जैसे ही उन्हें पता चला कि यह छोड़ी हुई औरत है, उनका नज़रिया ही सोना की तरफ से बदल गया। बिना तलाक वाली औरत कौन घर में रखकर मुसीबत मोल लेगा?

"चाचा, तुम काहे इन सबके चक्कर में पड़े हो, मुझे नौकरी दिलवा दो अभी। ठिकाना मिल जाये तो दिमाग सही बात सोचेगा।" सोना रमज़ान की परेशानी देख खीझ उठती।

धोबियों में लाली की बात किसी से छुपी न थी। कहने वालों ने तो यहां तक भी कह दिया कि मां को देखना हो तो बेटी को देखो और जो बेटी को देखना हो तो मां को देख लो। सोना आखिर उसी लाली धोबिन की बेटी है न, जो दिगम्बर के साथ बैठ गयी। तो फिर सोना कैसे अपना घर बसाये रखती? उसे भी तो कोई-न-कोई पैसे वाला मर्द चाहिए होगा। तभी शौहर के घर से भागकर चाचा के घर पड़ी है। इन सारी बातों से रमज़ान का दिमाग भनभनाने लगता था। अपने दोस्त राजा की याद उसे आती कि दोनों एक साथ गांव से निकले थे। इस बड़े शहर की भीड़ में दोनों अलग हुए तो फिर मौत के दिन ही राजा का चेहरा देख पाया था। अब तो सोना की उसी बस्ती से जमने की खबर रमज़ान को मिली तो वह बड़ा खुश हुआ।

वह दोपहर भी मनहूस थी जब बुलडोज़र ने उसकी झुग्गी के संग सारी बस्ती उजाड़ दी। वह ज़मीन किसी ठेकेदार ने खरीद ली थी। वहां पर वह एक सिनेमा हॉल बनाना चाहता था। रग्घू दादा की भी कुछ न चली और लुटा-पिटा गरीबों का काफिला अपने ही घर के मलबे पर रात गुज़ारने पर मजबूर हुआ। सोना का दिल उस रात से चारदीवारी की चाहत से मुक्त हो गया। उसने मिट्टी के ढेर पर बैठ-बैठे सामने कतार से खड़े पक्के ऊंचे मकानों और कोठियों को देखा। फिर वहीं ढेर पर लेट गयी। ऊपर आसमान पर तारे छिटक रहे थे। उन्हें देख सोना का दिल हल्का हुआ और अन्दर से एक हंसी फूटी। उसकी चौकन्नी आंखें पहले से ज़्यादा चमकदार हो उठीं।

चित्र: प्रशांत ए.वी.

इस बस्ती के मलबे के ढेर के सामने सोना ने चलता-फिरता ढाबा खोल लिया। सुबह से चाय भट्ठी पर चढ़ जाती और दोपहर को आलू-गोभी की सब्ज़ी के साथ रोटी बनने लगती। मज़दूरों को खिलाकर जब वह परात में बचे आटे की दो लोई को अपने लिए बेलती तो सुख का एक असीमित सागर सीने में मचलता। उसका मस्त चेहरा देखकर अक्सर मज़दूर उसके संग ब्याह रचाने की बातें कहते तो वह खिलखिलाकर हंस पड़ती। फिर गम्भीर होकर पूछती, "एक रोटी और ले ले ताकि फज़ूल बातों की जगह न तेरे पेट में बचे, न दिमाग में..." मज़दूर खिसियाकर उठ जाता और सोना ज़मीन पर थूक देती, जैसे कह रही हो कि इस दुनिया के हर कोने पर मर्द खड़ा मिलेगा, कभी प्रेमी के रूप में तो कभी बलात्कारी के रूप में। मगर जो पति ढूंढने निकलो तो एक भी कायदे का आदमी नज़र नहीं आएगा, जिसके साथ उम्र एक छत के नीचे गुज़ार दी जाये। मैं तो यूं ही भली। न कोई मेरा ठौर-ठिकाना, न मैं किसी घर की मालकिन। दुनिया की आबादी हूं और हालात की शहज़ादी हूं। इन मर्दों को अब यह कौन समझाए?